जाता है।

(vii) अनुभूतिमय एकांकी—इसमें अनुभूति के मनोरम

5. निबन्ध

निबन्ध शब्द 'नि + बन्ध' से बना है, जिसका अर्थ है अच्छी तरह बँधी हुई परिमार्जित प्रौढ़ रचना। निबन्ध को अंग्रेजी में ऐसे (Essay) कहा जाता है। यहाँ इसका अर्थ प्रयोग, प्रयत्न या परीक्षण लिया गया है। अत: किसी विषय को भली-भाँति प्रतिपादन करना निबन्ध कहा जाता है। वह रचना जिसमें विचार तथ्य आदि पूर्णतया बँधा हुआ हो उसे निबन्ध कहते हैं।

"किसी एक विषय पर विचारों को क्रमबद्ध कर सुन्दर, सुगठित और सुबोध भाषा में लिखी रचना को निबन्ध कहते हैं।"

बाबू गुलाबराय के अनुसार, "निबन्ध उस गद्य रचना को कहते हैं जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, सौष्ठव, सजीवता तथा आवश्यक संगति और सम्बद्धता के साथ किया गया हो। यह विधा हिन्दी साहित्य में पूर्णरूप से अर्जित सम्पत्ति है। यह सर्वथा खरी बोली गद्य की देन है। साथ ही इसकी प्रेरणा पश्चिमी है। हिन्दी गद्य का यह आधुनिक रूप है।" हिन्दी गद्य साहित्य के विकास के समय अंग्रेजी में भी निबन्ध विधा अधिक विकसित नहीं हुई थी इस कारण इस विधा का विकास हिन्दी में मौलिक रूप में ही अधिक गति से हुआ।

निन्बध की परिभाषाएँ

- यूरोप में निबन्ध का 'जनक' मानतेन/मोंटेन (फ्रेंच विद्वान) को माना जाता है।
- मानतेन विश्व के पहले निबन्धकार थे। इनका समय (1533-1592 ई.) इन्होंने निबन्ध की परिभाषा देते हुए कहा—"निबन्ध विचारों, कथाओं और उद्धरणों का मिश्रण है।"
- अंग्रेजी में निबन्ध के जनक 'लार्ड बेकन' थे। इनका समय (1561-1626 ई.) था। ये इंग्लैण्ड के रहने वाले थे। इन्हीं के शब्दों में 'निबन्ध' बिखराव युक्त चित्त है।

जॉनसन के शब्दों में—"निबन्ध मन का आकस्मिक और चिन्तनहीन बुद्धि विलास मात्र है।"

डॉ. भागीरथी मिश्र के शब्दों में, "निबन्ध वह गद्य रचना है, जिसमें लेखक किसी विषय पर स्वच्छन्दता पूर्वक परन्तु किसी विशेष सौष्ठव संहिती सजीवता और व्यक्तिकता के साथ अपने भावों विचारों और अनुभवों को व्यक्त करता है।"

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में, "प्रमाणों का 'निबन्धन' ही निबन्ध है। निबन्ध व्यक्ति की स्वाधीनता की उपज है।"

श्याम सुन्दरदास के शब्दों में, "निबन्ध उस लेख को कहना चाहिए जिसमें किसी गहन विषय पर विस्तारपूर्वक पांडित्यपूर्ण विचार किया गया हो।"

आचार्य शुक्ल के अनुसार, "यदि गद्य कवियों की कसौटी है, तो निबन्ध गद्य की।"

आचार्य रामचन्द्रशुक्ल निबन्ध के रहस्य को उद्घाटित करते हुए कहते हैं—"निबन्ध उसी को कहना चाहिए जिसमें व्यक्तित्व अर्थात् व्यक्तिगत विशेषता हो। यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है, तो निबन्ध गद्य की कसौटी है। भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबन्ध में ही सबसे अधिक सम्भव होता है।"

इस प्रकार निबन्ध किसी विषय पर विचार प्रगट करने की कला है। इसमें विचारों को क्रमबद्ध रूप में पिरोया जाता है। इसमें ज्ञान विचार और व्यक्तिगत का अद्भुत संगम होता है।

Scanned with CamScanner

निबन्ध की शैलियाँ–

(1) समास शैली–इस प्रकार के निबन्ध शैली में निबन्धकार कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक बातों का प्रतिपादन करता है। इस शैली का प्रयोग विचारात्मक निबन्धों के लिए किया जाता है। इस प्रकार के निबन्ध में वाक्य सुगठित और कसे हुए होते हैं। गम्भीर विषयों के लिए इस शैली का प्रयोग किया जाता है। (आचार्य रामचन्द्रशुक्ल के निबन्ध इस शैली के उदाहरण हैं।)

व्यास शैली–इस तरह के निबन्धों में लेखक अपने विचारों को बढ़ा-चढ़ाकर विस्तारपूर्वक प्रस्तुत करता है। लेखक अपने विभिन्न तर्कों और उदाहरणों के माध्यम से व्याख्यायित करता है। वर्णनात्मक, विवरणात्मक और तुलनात्मक निबन्धों में निबन्धकार इसी प्रकार की शैली का प्रयोग करता है।

तरंग शैली–इस शैली के निबन्धों में वाक्य छोटे, सरल तथा कभी-कभी क्रियाहीन भी हो जाए। उसे तरंग शैली कहते हैं। इसका प्रयोग भावात्मक निबन्धों में होता है। (सरदारपूर्ण सिंह इस शैली के उदाहरण हैं।)

विक्षेप शैली–(भटकाव) जहाँ मन पर संयम नहीं हो, विचार भटके हुए हो उसे विक्षेप शैली कहते हैं। इसमें निबन्धकार अपने मन के मुताबिक बात कहता हुआ चलता है, विषय पर केन्द्रित अवश्य रहता है।

(डॉ. रघुवीर सिंह के निबन्ध इसके उदाहरण हैं) (शेष स्मृतियाँ)

प्रलाप (अनाप-सनाप बकना) शैली–जब किसी लेख भावों में उच्छृखलता आ जाती है। दुख और विरह से सम्बन्धित निबन्ध इस शैली में लिखे जाते हैं।

व्यंग्य शैली–जब रचनाकार लक्षणा या व्यंजना में अपने भावों या विचारों को व्यक्त करें। इस शैली में निबन्धकार व्यंग्य के माध्यम से अपने विषयों का प्रतिपादन करते हैं। इसमें विषय धार्मिक सामाजिक, राजनीतिक आदि भी हो सकते हैं। इसमें रचनाकार किंचित हास्य को पुट देकर विषय को पठनीय बना देता है। शब्द चयन और अर्थ चमत्कार की दृष्टि से इस शैली का निबन्धकारों में विशेष प्रचलन है। व्यंग्यात्मक निबन्ध इसी शैली में लिखे जाते हैं। (हरिशंकर परसाई, शरद जोशी के निबन्ध इसके उदाहरण हैं।)

निबन्ध के चार तत्व–(1) शीर्षक–'शीर्षक' संक्षेप और रोचक होना चाहिए।

(2) **प्रस्तावना या भूमिका**–यह निबन्ध की नींव होती है। विषय वस्तु की ओर संकेत किया जाता है।

(3) **विस्तार**–लेखक के द्वारा अपने दृष्टिकोण का प्रतिपादन उदाहरणों दृष्टान्तों आदि से समाप्त होता है।

(4) **उपसंहार**–उपदेश और उदाहरण से समाप्त होता है।

हिन्दी का प्रथम निबन्धकार–आचार्य रामचन्द्रशुक्ल, गुलाबराय के अनुसार–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के द्वारा लिखा गया (1872 ई.) में लिखा गया 'नाटक' निबन्ध हिन्दी का पहला (आलोचनात्मक) 'नाटक तथा अन्य कलाएँ' निबन्ध भारतेन्दु जी ने 1833 ई. में लिखा गया।

डॉ. लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय डॉ. श्री कृष्णलाल के अनुसार, बालकृष्ण भट्ट को माना है। बालकृष्ण भट्ट को हिन्दी का 'मॉंटेन' कहा जाता है। आचार्य गणपतिचन्द्र गुप्त के अनुसार, पहला निबन्धकार राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' को पहला निबन्धकार माना है। 1839 ई. में राजा भोज का सपना। इसे कुछ लोग 'कहानी' और कुछ लोग निबन्ध मानते हैं।

विश्वनाथ एम. ए. के अनुसार, इन्होंने मुंशी सदासुखलाल को हिन्दी का पहला निबन्धकार माना है। निबन्ध 'सुरासुर निर्णय' 1840 ई. में किया।

हिन्दी निबन्ध का विकास क्रम

(1) भारतेन्दु युग–1857 – 1900 ई.

(2) द्विवेदी युग–1900 – 1920 ई.

(3) शुक्ल युग–1920 – 1940 ई.

(4) शुक्लोत्तर युग–1940 – अब तक

(1) भारतेन्दु युग (1857 – 1900 ई.)

भारतेन्दु युग के निबन्धों की विशेषताएँ–

(1) विषय की विविधता थी।

Scanned with CamScanner

(2) साहित्य को जन-जीवन के समीप लाने का प्रयास है।

(3) लेखकों एवं पाठकों के बीच आत्मीयता थी।

(4) सामाजिक सुधार की भावना इन निबन्धों में होती थी।

(5) देश प्रेम की प्रवृत्ति और राजशक्ति भी थी।

भारतेन्दु युग में दो प्रकार के निबन्धों की रचनाएँ हुईं।

(i) सामाजिक विषयों पर आधारित जैसे– धर्म, देशभक्ति, आचार-व्यवहार, सामाजिक पतन, विधवा-विवाह आदि।

(ii) विज्ञान इतिहास एवं मनोभावों पर आधारित साहित्यिक निबन्ध की रचना की गई थी।

भारतेन्दु युग के प्रमुख निबन्धकार–

बालकृष्ण भट्ट (1844 – 1904 ई.) साहित्य सुमन, भट्ट निबन्धावली।

काशीनाथ खत्री (1849 – 1891 ई.)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (1850 – 1885 ई.) नाटक, कालचक्र (जर्नल) भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है। कश्मीर या कुसुम, जातीय संगीत, सगीत सार, हिन्दी भाषा, स्वर्ग में विचार सभा।

मोहन लाल विष्णु लाल पांड्या (1850 – 1912 ई.)

बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन (1855 – 1923 ई.)

निबन्ध लेखन के प्रारम्भिक काल में ही निबन्ध को रास्ता दिखलाने वाले दो प्रमुख ग्रन्थ हिन्दी में अनुवाद होकर प्रकाशित हुए। (1) बेकन विचार रचनावली (अंग्रेजों के पहले निबन्धकार) के अंग्रेजी निबन्धों का अनुवाद।

(2) विष्णुशास्त्री चिपलूणकर द्वारा लिखित 'निबन्धमाला दर्श' मराठी से हिन्दी में अनुवाद किया गया। यह दोनों भी ग्रन्थ अपनी भाषा के महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं। यह दोनों ग्रन्थ हिन्दी निबन्ध के विकास में महत्वपूर्ण रहे। इसके बाद हिन्दी साहित्यकारों ने पत्र-पत्रिकाओं में मौलिक निबन्ध लिखना आरम्भ किया। लेकिन आज भी कई भाषाओं से हिन्दी में निबन्धों का अनुवाद किया जाता है।

निबन्ध के भेद हैं–(i) वर्णनात्मक (ii) विचार मूलक (iii) भावात्मक ललित निबन्ध (iv) व्यंग्य निबन्ध, (v) साहित्यिक और आलोचनात्मक।

हिन्दी में निबन्ध विधा का प्रारम्भ भारतेन्दुयुगीन पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से माना जाता है। विविध विषयों पर लिखित भारतेन्दु युग के निबन्धों में गम्भीर तथा व्यंग्य विनोद से पूर्ण भाषा, क्षेत्रीय मुहावरों, लोकोक्तियाँ, शब्दों का प्रयोग था। भारतेन्दु के अतिरिक्त बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, बालमुकुन्दगुप्त, सर्वश्रेष्ठ निबन्धकार थे। शिवशम्भू का चिट्ठा, यमलोक की यात्रा, बाल आदि उल्लेखनीय निबन्ध है।

द्विवेदी युग निबन्धों की दृष्टि से महत्वपूर्ण काल है। इस काल में विचारात्मक और ललित निबन्धों का बाहुल्य है। अंग्रेजी के निबन्धों के अनुवाद भी आये, इस काल के प्रमुख निबन्धकार थे, महावीर प्रसाद द्विवेदी, चन्द्रधर शर्मा, गुलेरी, अध्यापक पूर्णसिंह, बाबू श्यामसुन्दर दास, गुलाबराय, पद्मलाल पन्नालाल बक्शी, पद्मसिंह शर्मा इस निबन्धकारों ने साहित्य की महत्ता नाटक, उपन्यास, समाज और साहित्य कला का विवेचन, कर्त्तव्यपालन, फिर निराश क्यों? जैसे-प्रेरणात्मक तथा विचारात्मक निबन्ध लिखें। अध्यापक पूर्णसिंह ने आचरण की सभ्यता, मजदूरी और प्रेम, जैसे-महत्वपूर्ण निबन्ध लिखें। इस काल के निबन्धों की भाषा में विचार अभिव्यक्ति के लिए लक्षणा और व्यंजना शक्ति को महत्व मिला। निबन्ध प्रभावाभिव्यंजक शैली ओज गुण से पूर्ण है।

आचार्य रामचन्द्रशुक्ल हिन्दी निबन्ध क्षेत्र के सर्वाधिक महत्वपूर्ण लेखक हैं। विचार वीथि और चिन्तामणि में संग्रहित शुक्ल जी के निबन्ध न केवल विचार चिन्तन से पूर्ण थे वरन् मनोवैज्ञानिक धरातल पर भी खरे थे। सरसता और गाम्भीर्य की विशेषता लिए शुक्ल जी वैज्ञानिक की तरह विषय का विश्लेषण करते हैं। भाव मनोविकारों पर लिखे उनके निबन्ध भय, क्रोध, ईर्ष्या, उत्साह, श्रद्धाभक्ति, लोभ और प्रीति 1912 से 1919 ई. में नागरी प्रचारिणी पत्रिका में प्रकाशित हुए थे जो बाद में चिन्तामणि भाग एक से संग्रहीत हुए, इन निबन्धों में शुक्ल जी मनोवैज्ञानिक की तरह भावों की व्याख्या कर उन्हें परिभाषित करते हैं।

Scanned with CamScanner